नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

भारत और 'ग्लोबल एजुकेशन हब'

नीति आयोग द्वारा जारी उच्च शिक्षा पर ताज़ा रोड मैप केवल एक नीतिगत दस्तावेज नहीं, बल्कि भारत की वैश्विक शैक्षणिक पहचान को पुनर्गठित करने वाला दूरदर्शी प्रस्ताव है. लंबे समय से भारत उच्च शिक्षा के क्षेत्र में आउट बाउंड नेशन की तरह देखा जाता रहा है,जहां लाखों छात्र बेहतर अवसरों की तलाश में विदेश जाते हैं, लेकिन विदेशी छात्र भारत आने से हिचकते हैं. आयोग द्वारा प्रस्तुत आंकड़े इस असंतुलन की कठोर सच्चाई सामने रखते हैं कि 28 भारतीय छात्रों के विदेश जाने के मुकाबले केवल 1 विदेशी छात्र भारत आता है. इसके कारण भारत न केवल प्रतिभा खोता है, बल्कि भारी आर्थिक निकास का भी सामना करता है. विदेश में पढ़ रहे लगभग 13.5 लाख भारतीय छात्र हर वर्ष करीब 6 लाख करोड़ रुपये खर्च करते हैं,जो हमारे शिक्षा बजट से कई गुना अधिक है. यह केवल ब्रेन ड्रेन नहीं, बल्कि फाइनेंशियल ड्रेन भी है. ऐसे में नीति आयोग का 2027 तक 11 लाख विदेशी छात्रों को भारतीय कैंपस में लाने का लक्ष्य शिक्षा अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित करने की बड़ी संभावना पैदा करता है. अनुमानित 5 लाख करोड़ रुपये का राजस्व भारतीय विश्वविद्यालयों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा में मजबूत बनाएगा.

परंतु महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या केवल आंकड़े और लक्ष्य पर्याप्त होंगे ? भारत को ग्लोबल एजुकेशन हब बनाने के लिए शिक्षा की गुणवत्ता, अनुसंधान-संस्कृति और अकादमिक वातावरण में गहरे सुधार आवश्यक हैं. विदेशी छात्रों को आकर्षित करने के लिए विश्वस्तरीय पाठ्यक्रम, उद्योगों की सहभागिता, प्रयोगशालाओं और बहुभाषीय समर्थन प्रणालियों का विकास करना होगा. साथ ही, भारतीय विश्वविद्यालयों की वैश्विक रैंकिंग केवल ब्रांडिंग से नहीं, बल्कि शिक्षा के वास्तविक मानकों से सुधरेगी,जहां फैकल्टी विकास, शोध-प्रकाशन और नवाचार निर्णायक भूमिका निभाते हैं.आयोग द्वारा सुझाए गए कदम,वीजा सरलीकरण, 'स्टडी इन इंडिया' पोर्टल का विस्तार, स्कॉलरशिप और आवासीय सुविधाओं का उन्नयन,निश्चित रूप से स्वागत योग्य हैं. इसी के साथ आयुष, योग, भारतीय दर्शन और संस्कृति आधारित कोर्सेज भारत की शैक्षणिक पहचान को विशिष्ट बनाते हैं. यदि इन विषयों को आधुनिक अकादमिक ढांचे में समाहित किया जाए, तो वे भारत की सॉफ्ट पावर को नए आयाम दे सकते हैं. हालांकि, इस यात्रा में कुछ सावधानियां भी आवश्यक हैं. विदेशी विश्वविद्यालयों को कैंपस खोलने की अनुमति प्रतिस्पर्धा तो बढ़ाएगी, परंतु यह सुनिश्चित करना होगा कि भारतीय संस्थान उनकी छाया में दब न जाएं. यह मॉडल संतुलित सहभागिता पर आधारित होना चाहिए, न कि एकतरफा बाजारीकरण पर. शिक्षा को केवल राजस्व के दृष्टिकोण से देखना भी उचित नहीं होगा. दरअसल, इसका मूल उद्देश्य मानव संसाधन का विकास और चिंतन की स्वतंत्रता होना चाहिए .इस पहल का एक बड़ा लाभ यह भी हो सकता है कि विदेश जाने वाले भारतीय छात्रों के लिए उत्कृष्ट संस्थान यहीं उपलब्ध हों. यदि भारत में विश्वस्तरीय शोध सुविधाएं और वैश्विक एक्सपोज़र तैयार होता है, तो ब्रेन ड्रेन स्वाभाविक रूप से घटेगा. भारत तभी सच्चे अर्थों में ज्ञान आधारित आर्थिक शक्ति बनेगा, जब हमारे विश्वविद्यालय केवल डिग्री देने वाले केंद्र न रहकर विचार-निर्माण के मंच बनें.

नीति आयोग की यह पहल सही दिशा में बढ़ता कदम है,परंतु इसका सफलता का समीकरण शिक्षा की गुणवत्ता, पारदर्शी प्रशासन और दीर्घकालिक निवेश से ही तय होगा. यदि भारत इस अवसर को रणनीतिक एवं जिम्मेदार दृष्टि से प्राप्त कर पाया, तो वह न केवल ग्लोबल एजुकेशन हब बनेगा, बल्कि विश्व मंच पर अपनी पुरातन 'विश्व गुरु' परंपरा को आधुनिक अर्थों में पुन: स्थापित भी कर सकेगा.

केरल नगर निकाय चुनाव

दक्षिण में कमल खिलने का दौर शुरू

श्याम यादव

केरल की राजनीति को लंबे समय से वाम दल और कांग्रेस के बीच की वैचारिक प्रतिस्पर्धा के रूप में देखा जाता रहा है. इस परिदृश्य में भारतीय जनता पार्टी की भूमिका अब तक सीमित और हाशिये की मानी जाती थी. लेकिन, हालिया नगर पालिका चुनावों में भाजपा को मिली सफलता ने इस स्थापित धारणा को चुनौती दिया. लेकिन, अभी भविष्य को लेकर कोई दावा करना जल्दबाजी होगी.

केरल स्थानीय निकाय के चुनाव नतीजे दक्षिण भारत में भाजपा के भविष्य, उसकी रणनीति और बदलते मतदाता व्यवहार को लेकर नए सवाल खड़े करते है. इन चुनावों में भारतीय जनता पार्टी को मिली सफलता को महज़ एक स्थानीय राजनीतिक घटना के रूप में देखना सतही विश्लेषण होगा. यह परिणाम उस राज्य में सामने आया है, जिसे दशकों से वामपंथ और कांग्रेस की द्विध्रुवीय राजनीति का गढ़ माना जाता रहा है. ऐसे में भाजपा की यह जीत न केवल केरल की राजनीति में एक नया विमर्श शुरू करती है, बल्कि पूरे दक्षिण भारत में पार्टी के विस्तार की संभावनाओं पर भी गंभीर चर्चा की माँग करती है.

> कुल मिलाकर, केरल की नगर पालिका चुनावी जीत भाजपा के लिए एक अवसर भी है और चेतावनी भी. अवसर इस अर्थ में कि दक्षिण भारत अब पूरी तरह बंद राजनीतिक क्षेत्र नहीं रहा, और चेतावनी इस मायने में कि यहाँ की राजनीति सतही नारों से नहीं, बल्कि गहरी सामाजिक समझ से संचालित होती है. केरल ने फिलहाल एक संकेत दिया है. अब यह देखना शेष है कि भाजपा इस संकेत को स्थायी राजनीतिक उपस्थिति में बदल पाती है या नहीं.

केरल की राजनीतिक संरचना ऐतिहासिक रूप से वैचारिक रूप से स्पष्ट और संगठित रही है. यहाँ चुनाव केवल सत्ता परिवर्तन का साधन नहीं, बल्कि वैचारिक टकराव का मंच भी रहे हैं. वाम लोकतांत्रिक मोर्चा और संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा के बीच सत्ता का चक्र लगभग नियमित रहा है. भाजपा इस द्वंद्व में लंबे समय तक एक बाहरी शक्ति के रूप में ही देखी जाती रही. 2016 में ओ. राजगोपाल का विधानसभा पहुँचना प्रतीकात्मक था, लेकिन उसे किसी बड़े राजनीतिक परिवर्तन का संकेत नहीं माना गया.

बीते एक दशक में भाजपा के वोट प्रतिशत में हुई क्रमिक बढ़ोतरी को अनदेखा नहीं किया जा सकता. 2011 के विधानसभा चुनावों में जहाँ पार्टी को लगभग 6 प्रतिशत वोट मिले थे, वहीं 2021 तक यह आँकड़ा 12ङ्क13 प्रतिशत के आसपास पहुँच गया. लोकसभा चुनावों में भले ही पार्टी खाता नहीं खोल पाई, लेकिन कई शहरी और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में वह निर्णायक स्थिति में पहुँची. नगर पालिका चुनावों में मिली ताज़ा जीत इसी राजनीतिक यात्रा का अगला पड़ाव है. स्थानीय निकाय चुनावों का महत्व अक्सर कम आँका जाता है, जबकि वास्तव में यही चुनाव किसी भी पार्टी की ज़मीनी ताकत और संगठनात्मक क्षमता को उजागर करते हैं. नगर पालिका स्तर पर जीत का अर्थ है—बूथ प्रबंधन, स्थानीय नेतृत्व और रोज़मर्रा के मुद्दों पर पकड़. भाजपा का यहाँ सफल होना बताता है कि पार्टी ने केवल वैचारिक अपील पर नहीं, बल्कि संगठन और स्थानीय राजनीति की बारीक समझ पर भी काम किया है. यह वही मॉडल है, जिसे उसने पहले उत्तर भारत और फिर कर्नाटक में अपनाया था.

दक्षिण भारत में भाजपा की राजनीतिक यात्रा एक समान नहीं रही है. कर्नाटक में पार्टी ने सत्ता स्थापित की, लेकिन तमिलनाडु और केरल में उसकी उपस्थिति सीमित बनी रही. तेलंगाना में हाल के वर्षों में भाजपा ने कांग्रेस और क्षेत्रीय दल के बीच एक विकल्प बनने की कोशिश की है, और कुछ चुनावी नतीजों ने इस संभावना को बल भी दिया है. आंध्र प्रदेश में पार्टी अब भी संघर्ष के दौर में है. इस पूरे परिदृश्य में केरल की नगर पालिका चुनावी सफलता एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संकेत के रूप में उभरती है.

केरल में भाजपा के सामने सबसे बड़ी चुनौती सामाजिक और वैचारिक रही है. यहाँ जातीय राजनीति अपेक्षाकृत कमजोर है, जबकि वैचारिक प्रतिबद्धता और सामुदायिक संतुलन अधिक प्रभावी भूमिका निभाते हैं. वामपंथ का मजबूत कैडर, चर्च और मुस्लिम संगठनों की सामाजिक पकड़ तथा कांग्रेस का पारंपरिक आधार—इन सबके बीच भाजपा के लिए जगह बनाना आसान नहीं रहा. इसके बावजूद, शहरी मध्यम वर्ग, युवा मतदाता और कुछ हद तक पिछड़े वर्गों में भाजपा की स्वीकार्यता बढ़ी है. नगर पालिका चुनावों के नतीजे इसी सामाजिक बदलाव की ओर इशारा करते हैं.

भाजपा की रणनीति में भी बीते वर्षों में स्पष्ट बदलाव दिखता है. पार्टी अब दक्षिण भारत को केवल वैचारिक विस्तार का क्षेत्र नहीं, बल्कि राजनीतिक निवेश का क्षेत्र मानकर चल रही है. स्थानीय नेतृत्व को आगे लाना, क्षेत्रीय भाषाओं में संवाद और राज्य-विशेष के मुद्दों पर फोकस, ये सभी बातें केरल में भी दिखाई देने लगी हैं.

महाकौशल की डायरी

भाजपाई दफ्तर से तुलना कर अपने आप को कोस रहे कांग्रेसी...

अविनाश दीक्षित

जबलपुर में भाजपा के ऑलीशान दफ्तर को देख-देखकर शहर कांग्रेस कमेटी के वरिष्ठ नेता से लेकर पार्टी के हर एक कार्यकर्ता मन ही मन व्यथित हो रहे हैं. दबी जुबान से अंदर ही अंदर हीनता का भाव कांग्रेसियों में नजर आ रहा है.. इसकी मुख्य वजह जबलपुर में कांग्रेस पार्टी का खुद की जमीन पर कार्यालय अभी तक स्थापित न कर पाना है. जबलपुर कांग्रेस के इतिहास की बात करें तो अभी तक जितने भी नगर अध्यक्ष रहे हैं उन्होनें अपनी ही जमीन पर या किराए की जगह लेकर पार्टी का कार्यालय संचालित किया है. मौजूदा नगर अध्यक्ष सौरभ नाटी शर्मा भी अपने स्थान से पार्टी का कार्यालय संचालित करते नजर आ रहे हैं.

दूसरी ओर कांग्रेस से पहले जुड़े हुए ऐसे नेता जो अब भाजपा का दामन थाम चुके हैं वे दो टूक कहते नजर आ रहे हैं कि शहर कांग्रेस के दिग्गजों ने सरकार रहते वक्त सत्ता का सही उपयोग नहीं किया और न ही शहर में पार्टी कार्यालय के लिए गंभीर होकर कोई रूचि दिखाई जिसका नतीजा है कि आज कांग्रेस पार्टी के पास खुद का कार्यालय उनकी जमीन पर मौजूद नहीं है. ऐसे में शहर कांग्रेस से जुड़ा हर एक नेता, कार्यकर्ता ये भी कहने मजबूर हो रहा है कि हम लोगों का ये सबसे बड़ा दुर्भाग्य है. पार्टी के अंदरखाने से

खबर निकलकर आ रही है कि शहर के बीचों-बीच करीब 10 . 34 एकड़ जमीन की प्रॉपर्टी कांग्रेस के पास है जिसमें एक भवन और चार बड़े ग्राउंड शामिल हैं लेकिन पिछले कई सालों से इस जमीन पर एक परिवार ने महाकोशल शहीद स्मारक ट्रस्ट के नाम पर कब्जा जमा रखा है. अब तो कांग्रेसी ये भी कहने लगे हैं कि शहीद स्मारक गोलबाजार में अनेक आयोजन हो सकते हैं तो क्या पार्टी का कार्यालय नहीं खुल सकता. स्थानीय कांग्रेस के इतिहास के मुताबिक कांग्रेस के पूर्व नगर अध्यक्ष शिवनाथ साहू, चंद्रकुमार भनोत, राममूर्ति मिश्रा, नरेश सराफ, दिनेश यादव, पूर्व अध्यक्ष और अब भाजपा में शामिल महापौर जगत बहादुर अन्नू ने अपने-अपने स्थान से पार्टी का कार्यालय जबलपुर में संचालित किया है. ये नेता कद्दावर होने के साथ ही आर्थिक रूप से सक्षम भी रहे हैं मगर इस ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया.

कहीं अंदर ही अंदर न सुलग जाए चिंगारी...

संभाग के सबसे बड़े नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल कॉलेज अस्पताल के करीब एक हजार कर्मचारी बीते कई माह से अपने साथ हो रहे भेदभाव को लेकर काफी आक्रोशित हो चुके हैं. कयास लगाए जा रहे हैं कि कहीं ये आक्रोश सड़कों पर न उतर जाए और एक बड़े आंदोलन का रूप न ले. वजह नेशनल पेंशन स्कीम के रुपयों का पता न चलना है. देखा जा रहा है कई दिनों से कर्मचारी अपने खातों में इस स्कीम के तहत कितने रुपए जमा होने का पता लगा रहे हैं लेकिन उनको कोई जानकारी नहीं दे रहा है. ऐसे में कर्मचारी मेडिकल के गलियारों में दो टूक कहते हुए भी नजर आ रहे हैं कि यदि ये समस्या डॉक्टर्स से जुड़ी होती तो तुरंत उसका निराकरण कर दिया जाता चूंकि समस्या कर्मचारियों से जुड़ी है इसलिए भेदभाव हो रहा है.

परिंदों के आशियाने को कचरे में फेंकने वाला कौन...?

अभी कर्मचारी संघ अध्यक्ष और कर्मचारियों के दूसरे गुट का विवाद थमा ही नहीं था कि रानीदुर्गावती विश्वविद्यालय एक बार फिर से अधिकारी- कर्मचारियों के कारनामे से सुर्खियों में आ गया है. ताजी तस्वीर विश्वविद्यालय के राष्ट्रीय सेवा योजना के कार्यालय के पास रद्दी की तरह कचरे में पड़े वन विभाग और टिंबर एसोसिएशन द्वारा नि :शुल्क दिए गए पक्षियों के घरौंदे से जुड़ी है जिसको जिसने देखा वो हैरान हो गया. पक्षियों के घरौंदे नाम मात्र के लिए विवि में लगाए गए और बाकी को कचरा समझकर फेंक दिया गया. इन सब के पीछे का गुनाहगार कौन है ये सवाल अब भी बरकरार है. जानकारों का कहना है कि हमेशा की तरह इस बार भी लापरवाह अधिकारी- कर्मचारियों की करतूत पर पर्दा डाल दिया जाएगा. हालांकि मामला संज्ञान में आने के बाद कुलगुरू जरूर कहते नजर आ रहे हैं कि मैं पता लगाऊंगा कि पक्षियों के घरौंदे किसने फेंके हैं और फिर संबंधित के खिलाफ सख्त कार्रवाई करूंगा लेकिन विवि के सूत्र कह रहे हैं कि ये कोरी बयानबाजी है, क्योंकि अब तक लापरवाह अधिकारी- कर्मचारियों पर कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई है जिस कारण लापरवाही और भर्राशाही विवि में पिछले कई महीनों से अपने चरम पर पहुंच चुकी है.

वैभव का रिकॉर्ड, नेताओं के विचार

बिहार के 15 वर्ष से भी कम आयु के क्रिकेट खिलाड़ी वैभव सूर्यवंशी ने विजय हजारे ट्रॉफी में खेलते हुए सिर्फ 36 गेंदों में सेंचुरी बना ली और 84 गेंदों में 190 रन ठोक दिए. उसकी आतिषी बल्लेबाजी को लेकर नेताओं की प्रतिक्रिया इस प्रकार रही.

प्रधानमंत्री मोदी : यह नए भारत का नया वैभव है. भगवान राम के समान वैभव भी सूर्यवंशी है. उसकी इस उपलब्धि पर 'जी राम जी' कहने को जी चाहता है.

अमित शाह : यह मोदी सरकार के समय ही संभव हो पाया. नेहरू युग में कहां ऐसे रिकॉर्ड बनते थे ! जय शाह के हाथों में बीसीसीआई की बागडोर रहने से यह करिश्मा हुआ.

सोनिया गांधी : वंशवाद की निंदा करनेवाले समझ लें कि सूर्यवंशी कितना सफल हुआ. आगे चलकर हम उसे कांग्रेस में शामिल कर लेंगे. राहुल को ऐसे ही उत्साही साथियों की जरूरत पड़ेगी.

शरद पवार : सूर्यवंशी को बिहार की बजाय महाराष्ट्र की ओर से खेलना चाहिए था क्योंकि विजय हजारे महाराष्ट्र के थे जिनके नाम पर यह टूर्नामेंट हो रहा है.

राज ठाकरे : वैभव सूर्यवंशी हिंदी भाषी है. परप्रांतीय खिलाड़ी की इतनी चर्चा क्यों होनी चाहिए. सिर्फ मराठी माणुस की बात कीजिए.

योगी आदित्यनाथ : हम वैभव को बिहार से यूपी बुला लेंगे और किसी जिले का नाम वैभव नगर रख देंगे. नाम बदलने में कौन सी देर लगती है !

ममता बनर्जी : वैभव चाहे तो हमारी पार्टी तृणमूल कांग्रेस में आ सकता है. दादा सौरभ गांगुली के समान हमें छोड़कर बीजेपी में नहीं जाना चाहिए.

अरविंद केजरीवाल सभी अच्छे खिलाड़ी छोटेशहरों से आते हैं वैभव को आम आदमी पार्टी में शामिल होना चाहिए. भगवंत मान उसे मनाकर पंजाब ला सकते हैं.

लालू यादव : वैभव को बताना चाहिए कि बिहार में वह हमारे साथ है या नीतीशवा के साथ !

(नोट : यह सारी प्रतिक्रिया अनुमानित है)

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कोई गाजर-मूली, कोई चुकंदर चुनाव जीतेगा मुकद्दर का सिकंदर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, हमें बताइए कि महानगरपालिका चुनाव लड़ने वाले सुयोग्य उम्मीदवार को कैसे पहचानें क्योंकि उनमें से कुछ बगुला भगत हैं तो किसी की संगत ठीक नहीं है. कोई चलाता अवैध कारोबार तो किसी का है बीयर बार!'

हमने कहा, 'कौन क्या करता है, इस पचड़े में बिल्कुल मत पड़िए. वैसे रेस में जीतनेवाले घोड़े और चुनाव में जीतनेवाले उम्मीदवार को पारखी नजर रखनेवाले ही पहचान सकते हैं. फिर भी आप मानकर चलिए कि जो जीता वही सिकंदर! हार कर जीतनेवाले को बाजीगर कहते हैं और कुशल नेता किसी बाजीगर से कम नहीं होता.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, हम उम्मीदवारों की भीड़ में से जीतनेवाले को आखिर कैसे पहचानें? शीशे के टुकड़ों में असली हीरा कौन है?'

हमने कहा, 'जीतने की क्षमता वाले दबंग नेता या तो जेल में हैं अथवा दल बदलकर दूसरे खेमे में चले गए हैं. उन्हें आप चिराग लेकर खोज सकते हैं. ऐसे-वैसे चिराग से काम

नहीं चलेगा. कहीं से अलादीन का जादुई चिराग खोज लाइए.' पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, पुलिसवाले किसी चीज को खोजने के लिए खोजी कुत्तों का सहारा लेते हैं. हम जीतनेवाले प्रत्याशी को ढूंढ़ने के लिए किसका सहारा लें?'

हमने कहा, 'आप चश्मा लगाकर अपनी चौफेर दृष्टि से उम्मीदवारों की भीड़ पर निगाह डालिए. वहां आपको अक्ल के अंधे और गांठ के पूरे लोग नजर आएंगे. इनमें से जीतनेवाला अपनी किस्मत से बाजी मार लेता है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, इसमें किस्मत की क्या बात है? यहां तो एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति है. पार्टी के नेता हैरान हैं कि किसे प्रत्याशी बनाएं. इतनी बड़ी महफिल है, ये दिल इसको दूं या उसको दूं ! जनसेवी, ईमानदार, सिद्धांतवादी कार्यकर्ता को ही उम्मीदवारी दी जाएगी.'

हमने कहा, 'ऐसे उम्मीदवार की जमानत जब्त हो जाती है. चुनाव जीतनेवाले के पीछे धनशक्ति और उसके समाज या जाति की जनशक्ति बहुत काम करती है. उसे प्रतिद्वंद्वी उम्मीदवार के वोट काटने का हथकंडा आना चाहिए. जिसमें लुभावने वादे करने का हुनर और जनता को सम्मोहित करने का कौशल हो, उसके लिए चुनाव जीतना बाएं हाथ का खेल है.'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12124

- डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. फावड़ा चलाने या जमीन खोदने वाला मजदूर (उर्दू) 5. आंखों से ओझल करना, प्रकट नहीं करना 8. विष्णु (सं.) 9. वह रज जो फूलों के बीच लंबे केसरों पर जमी रहती है, पुष्प रज 10. बगुला, कुबेर, सफेद (सं.) 11. पैर या हाथ की सबसे छोटी तथा अंतिम उंगली 13. एक फल विशेष, आम्र, जनता का 14. ठहरने का स्थान, खेमा, तंबू, छावनी 16. धोखा देना, मोहित करना, छल, धोखा 17. एक देव योनि जिसके राजा कुबेर हैं. 19. संदेह, शंका (उर्दू) 21. श्रीकृष्ण के बाल सखा जो बहुत दरिद्र थे 22. अरब का एक प्रदेश, रोकना 23. कैंची या अन्य किसी औजार से काटना

ऊपर से नीचे

1. रोटी बनाने के लिए चकले पर लोई रखकर पतला करना 2. धन की अधिष्ठात्री देवी जो विष्णु की पत्नी मानी जाती है, धन, संपत्ति 3. अन्न जल, जीविका 4. वाहन, गाड़ी, घोड़ों या पशुओं द्वारा खींचा जाने वाला यान (सं.) 5. एक रेंगने वाला जंतु जो प्राय: घर की दीवारों पर दिखाई देता है और कीड़े खाता है 6. एक प्रसिद्ध चमकदार तरल धातु 7. महाराष्ट्र की उपराजधानी 10. फैलना, छितराना 11. कार्य, प्रयोजन, सरोकार, व्यवसाय 12. तरल पदार्थ को किसी अन्य पात्र में डालना 13. जठर, पेट के भीतर की वह थैली जिसमें खाया हुआ अन्न जाता और पचता है 15. मजबूत, दृढ़, टिकाऊ (उर्दू) 18. क्षमा करना 20. अल्प, थोड़ा (उर्दू) 21. पुत्र, बेटा (सं.)

Solution 12123

गा	था		च	ल		शो	र
ज	ल		प	ता		भा	व
			ल	ड़			
ज	ग	ह			त	ट	स्थ
ग	ह	रा			स	ब	ल
			पा	स			
आ	यु		ग	ली		भू	ख
धा	वा		ल	ब		रा	त

ज्योतिषाचार्य पंडित प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा. जीवन आनन्ददायक रहेगा. अध्ययन के प्रति आकस्मिक यात्रा का योग है, आर्थिक संसाधनों में सामान्य सुधार होगा. पारिवारिक समस्याओं से कष्ट होगा. वर्ष के मध्य में राजनीति के क्षेत्र मेंपरिवर्तन हो सकता है. लाभप्रद समाचार मिलेगा.

मेष और वृश्चिकराशि के व्यक्तियों को अत्याधिक परिश्रम के बाद आंशिक लाभ होगा. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को पारिवारिक जीवन सुखद रहेगा. मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को आर्थिक संसाधनों मेंसुधार होगा. कर्क राशि के व्यक्तियों को आर्थिक लाभ होगा. सिंह राशि के व्यक्तियों को यात्रा में यथेष्ठ सतर्कता बांछनीय. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को राजनीति में मित्र द्वारा सहयोग प्राप्त होगा. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को आकस्मिक व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक बुद्धिमान, चतुर, व्यवहार कुशल, कल्पनाप्रिय, दार्शनिक, हंसमुख, एवं मिलनसार होगा, शिक्षा उत्तम रहेगी, लेखन अध्ययन में रूचि रहेगी, माता पिता का भक्त होगा.

उदयकालीन ग्रह चाल

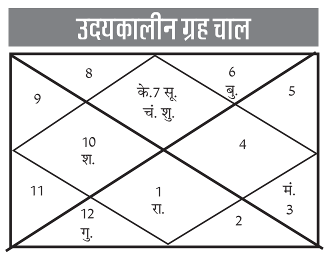

पंचांग

रा.मि. 08 संवत् 2082 पौष शुक्ल दशमीं चन्द्रवासरे रात 3/27, अश्विनी नक्षत्रे रात 2/25, शिव योगे रात 1/35, तैतिल करणे सू.उ. 6/47, सू.अ. 5/13, चन्द्रचार मेष, शु.रा. 1, 3, 4, 7, 8, 11 अ.रा. 2, 5, 6, 9, 10, 12 शुभांक- 3, 5, 9.

व्यापार भविष्य

पौष शुक्ल दशमीं को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से सूत, कपास, गेहूँ, जौ, चना, चांवल, मक्का, सोना, चांदी, के भाव मे तेजी होगी, गुड़ खांड, ज्वार, बाजरा, धनियां, के भाव में मंदी होगी, जूट, पाट, बारदाना पूर्ववत् रहेंगे. भाग्यांक 5601 है.

मेष- आपके रूखे व्यवहार से घर में कलह पैदा हो सकती है, नई योजना लाभदायक रहेगी, आकस्मिक लाभ होगा, विशिष्टजनों से मेलजोल बढेगा.

वृषभ- नए काम की शुरूआत औरकानूनी मसले पर सबकी राय लेकर आगे बढ़े, सफ्लता मिलेगी, भाग्यवर्धक शुभ समाचार मिलेगा, मनोबल बना रहेगा.

मिथुन- धार्मिक कार्यो में खर्च की संभावना बनेगी, नए संपर्को का लाभ मिलेगा, आलस्य उदासीनता के कारण कामकाज में अरूचि रहेगी.

कर्क- भाग्योदय के अवसर मिलेंगे, कार्यस्थल पर आपके काम की मिली जुली प्रतिक्रिया रहेगी, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा, व्यवसाय अच्छा चलेगा.

सिंह- आप जिन पर भरोसा कर रहे हैं, वे आपका विरोध करेंगे, शुभ समाचार मिलेगा, यश मिलेगा. मनोकामना की पूर्ति होगी, मन में हर्ष रहेगा.

कन्या- अपने काम को वरीयता से निपटाने का प्रयत्न करें, अन्यथा मुश्किल हो सकती है, मानसिक अस्थिता रहेगी, बने बनाये कार्यो में व्यवधान आ सकता है.

तुला- वैभव के सामान पर बड़े खर्च की संभावना है, साहसिक पराक्रम बढेगा, जमकर जायजाद के कार्यो में सफ्लता प्राप्त होगी, राजकीय सम्मान मिलेगा.

वृश्चिक- परीक्षा प्रतियोगिता में सफ्लता मे आसार हैं, विवादास्पद मामले सुलझा सकते हैं, रूके हुये कार्यो में सफ्लता प्राप्त होगी, राजकीय सम्मान मिलेगा.

धनु- दूसरों के मामले में दखल से बचें, अटके काम पूरा करने में मित्रों की मदद मिलेगी, सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, प्रवास का योग है.

मकर- अधूरी योजना फिर शुरू करने का मन बनेगा, मानसिक प्रसन्नता रहेगी, मनोरंजन, भ्रमण आमोद प्रमोद के अवसर मिलेंगे, उन्नति का योग है.

कुम्भ- मार्गदर्शन से अच्छी सफ्लता की संभावना है, परिवार आयोजन प्रसन्नता देंगे, जमकर जायजाद संबंधी विवाद हल होंगे, मित्रों का सहयोग रहेगा.

मीन- आपके सरल व्यवहार का लोग फायदा उठा सकते है, नई योजना बनेगी, नौकर चाकरों का सहयोग रहेगा, नियमितता का ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

SUDOKU 7256

			2				3	
		9		8		2	6	4
1				3	6		9	
4		3						
	8			2			1	
						8		6
	4		7	5				3
3	7	5		4		1		
	2				8			

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7255

8	4	5	6	1	3	7	2	9
7	2	6	4	9	5	3	8	1
9	3	1	7	8	2	6	5	4
1	7	2	9	6	8	4	3	5
5	6	9	3	2	4	1	7	8
4	8	3	5	7	1	9	6	2
2	9	7	1	5	6	8	4	3
3	1	8	2	4	7	5	9	6
6	5	4	8	3	9	2	1	7